उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र
दिगंत-भाग-2- काव्यखण्ड
शीर्षक- 'कइबक'
कवि- 'मलिक मुहम्मद जायसी' Date _____ Page _____

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न:- 'रकत का लेई' का क्या अर्थ है?

उत्तर:- प्रस्तुत पद में कवि ने लेई के रूपक से यह बताने की चेष्टा की है कि उसने अपने कथा के विभिन्न प्रसंगों को किस प्रकार एक ही सूत्र में बाँधा है। कवि कहता है कि मैंने अपने रक्त की लेई बनायी है अर्थात् कठिन साधना की है। यह साधना प्रेमरूपी आँसुओं से अप्लावित की गई है। कवि का व्यंग्यार्थ है कि इस कथा की रचना उसने कठोर सूफी साधना के फलस्वरूप की है और फिर इसको अपने प्रेमरूपी आँसुओं से विशिष्ट आध्यात्मिक विरह द्वारा पुष्ट किया है। लौकिक कथा को इस प्रकार अलौकिक साधना से परिपुष्ट करने का कारण भी जायसी ने अपनी काव्य कृति के द्वारा लोक जगत में अमरत्व प्राप्ति की प्रबल इच्छा बताया है।

प्रश्न :- कवि ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से क्यों की है?

उत्तर:- महाकवि जायसी ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से इसलिए की है कि दर्पण जिस प्रकार स्वच्छ और निर्मल होता है ठीक उसी प्रकार कवि की आँख भी स्वच्छता और पारदर्शिता का प्रतीक है। एक आँख से अन्धे होकर भी कवि काव्य-प्रतिष्ठा से युक्त है। अतः वह पूजनीय है। कवि अपनी निर्मल वाणी द्वारा सारे जनमानस को प्रभावित करता है जिसके कारण सभी लोग कवि की प्रशंसा करते हैं और नमन करते हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद 23/09/20
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० सुरक्षेत्रा, पूर्णियाँ

शास्त्री द्वितीय खण्ड, ~~खण्ड~~ राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री राम नरेश त्रिपाठी

Date ———— Page ————

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न - देश के सेवक को कैसा होना चाहिए?

उत्तर:- कवि रामनरेश त्रिपाठी जी का मानना है कि देश के सेवक को कठोर कर्मी होना चाहिए। परन्तु उसका हृदय मक्खन के समान कोमल होना चाहिए। उसमें नैतिक गुणों का भण्डार होना चाहिए। उसमें पराक्रम, पौरुष, क्षमा, सज्जनता इत्यादि सद्गुण होना चाहिए। देश को विकासशील और उन्नतशील बनाने के लिए पराक्रमी होना बहुत आवश्यक है। देश के सेवक को निष्ठा और ईमानदारी से आम-जन की सेवा करनी चाहिए।

प्रश्न:- कवि ने व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए कौन सी महत्वपूर्ण की है?

उत्तर:- कवि राम नरेश त्रिपाठी जी अपने 'पथिक' खण्डकाव्य में व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात की माँग की है जिसका दिनानुदिन अभाव होता जा रहा है। हम यह अच्छी तरह देख रहे हैं कि आधे दिन दुनिया से वास्तविकता का भाव दूर होता जा रहा है। सारी दुनिया बिना सोचे-समझे उग्रवादियों के गिरोह में शामिल होती जा रही है। गाँधीवाद साम्यवाद को खुलकर चुनौती दे चुका है। पथिक का कवि गाँधीवादी है और गाँधीवाद में ईश्वर की अलौकिक सत्ता को सिर झुकाकर स्वीकार किया गया है। त्रिपाठी जी ने भी इस पुस्तक में आस्तिकता पर जोर देते हुए बतलाया है कि परमपिता परमेश्वर की इच्छा से ही इस संसार की रचना हुई है। यह समस्त संसार उसी की क्रीड़ा का रूपक है। ईश्वर की इच्छा से ही पृथ्वी का उद्भव, पालन और प्रलय होता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० - हिन्दी एवं/का०
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक- मुंशी प्रेमचन्द

Date ______ Page ______

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या-

" पर यह कौन जानता था कि यह सारी लीला विधि के हाथों रची जा रही है। जीवन रंगशाला का वह निर्दय सूत्रधार किसी अगम्य गुप्त स्थान पर बैठा हुआ अपनी जटिल क्रूरक्रीड़ा दिखा रहा है। यह कौन जानता था कि नकल असल होने जा रही है, अभिनय सत्य का रूप ग्रहण करने वाला है।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'निर्मला' उपन्यास से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी साहित्य के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द जी है। इन पंक्तियों में उपन्यासकार ने जगत्-नियन्ता ईश्वर की गति का चित्रण करते हुए कहा है कि उसकी लीला को कोई नहीं जानता। बाबू उदयभानु अपने मरने का नाटक करने के लिए घर से निकले थे, परन्तु विधि की लीला ने उनके अभिनय को सच्चा कर दिया।

व्याख्या- निर्मला के पिता बाबू उदयभानु लाल ने यह ~~निश्चय~~ निश्चय किया कि वे अपने कुर्ते में परिचय कार्ड रखकर उसे गंगा किनारे रख देंगे और मिर्जापुर चले जायेंगे, इससे समझा जायेगा कि उनकी गंगा में डूबकर मृत्यु हो गयी। इससे कल्याणी को अच्छा सबक मिल जायेगा। वे छड़ी उठाकर अँधेरी रात्रि में चल पड़े, परन्तु यह कोई नहीं जानता था कि सारी लीला के सूत्रधार विधाता ही है। यह विधि ही सृष्टि का नियन्ता और सूत्रधार है। वह किसी अगम्य और गुप्त स्थान पर बैठा ~~है~~ हुआ है। यह जटिल एवं निर्दयतापूर्ण लीला उसकी क्रीड़ा मात्र है। यह किसी को पता नहीं था कि बाबू उदयभानु लाल जो मरने का अभिनय करने चले थे, वह सत्य होने जा रहा है। वे स्वयं नहीं जानते थे कि उनका यह अभिनय सत्य का रूप धारण कर लेगा और मतई के लाठी से ~~प्रहार~~ प्रहार करने पर उनकी जीवन लीला समाप्त हो जायेगी।

विशेष- मुंशी प्रेमचन्द आस्थावादी आस्तिक उपन्यासकार थे। यहाँ उन्होंने जगत् नियन्ता को सृष्टि का वास्तविक-

शेष आगे-

सूत्राधार माना है। संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने महाकाव्य 'रामचरित मानस' में लिखा है कि ईश्वर के इच्छा बिना वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं डोलता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद 29/09/20

एसो० प्रो० हिन्दी

रा०कृ०सं० महावि० खुश्कीबाग, पूर्णियाँ